

BIBL. DE L'UNIVERSITÉ

OBLONGS
32

T H È S E S

A N C I E N N E S

D U

X V I I . ^E S I È C L E

1



THÈSES ANCIENNES

Exemplaires coupés, sans les gravures.

(270 thèses en 2 v. obl.)

--000000--

| Discipline: | Soutenue le: | Volume: | N°: |
|--|------------------|---------|---------------|
| AIRSME (Jean d') | 31 juin 1639 | I | 2 |
| ARNOUX (F. Martial) | 31 août 1669 | I | 3 |
| ASSELINE (Jean) | 6 août 1661 | I | 4 |
| AUBERT (Jean) | 18 août 1662 | I | 5 |
| AUBERT (Jean) | 3 juill. 1660 | I | 6 |
| AUGER (Paul) | 29 janv. 1666 | I | 7 |
| AUMONT (Léonard) | 28 juill. 1668 | I | 8 |
| BACHELLER FEMUS (Nicolas) | 4/7 févr. 1662 | I | 9 |
| BARTIN DE LA CALISSONNIÈRE (Henri-Louis) | 26 août 165.. | I | 11 |
| BARRE (Charles) | 22/ juill. 1666 | I | 12 |
| BASTONNEAU (Robert) | 7/8 févr. 1662 | I | 13 |
| BAUD (Pierre) | .. mars 1666 | I | 14 |
| BAUBRAND (Henri) | 28 mai 1664 | I | 15 ,et 15bis. |
| BEAUVENU DE RIVAU (Pierre-François de) | 10 juill. 1659 | I | 16 ,et 16bis. |
| BEGON (Scipion) | 6 déc. 1669 | I | 17 |
| BELLOUER (Charles) | 4 août 1668 | I | 18 |
| BENNETT (Charles) | 24 mai 1662 | I | 19 |
| BERRUYER (Simon) | 19 juill. 1662 | I | 20 |
| BERRAUD DE LA FEROUSE (François de) | ? | I | 21 |
| BILLET (Nicolas) | 22 mars 1670 | I | 22 |
| BIMARD (Pierre) | 30 juill. 1669 | I | 23 |
| BLAKE (Fr. Henri) | 23/23/ fév. 1691 | I | 24 ,et 24bis. |
| BLOVET DE CAMILLY (Pierre-François) | 17 nov. 1661 | I | 25 |
| BLOVET DE THAM (Jean) | 9 août 1662 | I | 26 |
| BOEHELLE (Adrien) | 17 août 1653 | I | 27 |
| BOISSOURION (Armand de) | 14 avr. 1666 | I | 28 |
| BOLLOND (Jean) | 24 mai 1669 | I | 29 |
| BONNET (Jacques-Lorent) | 5 juill. 1665 | I | 30 |

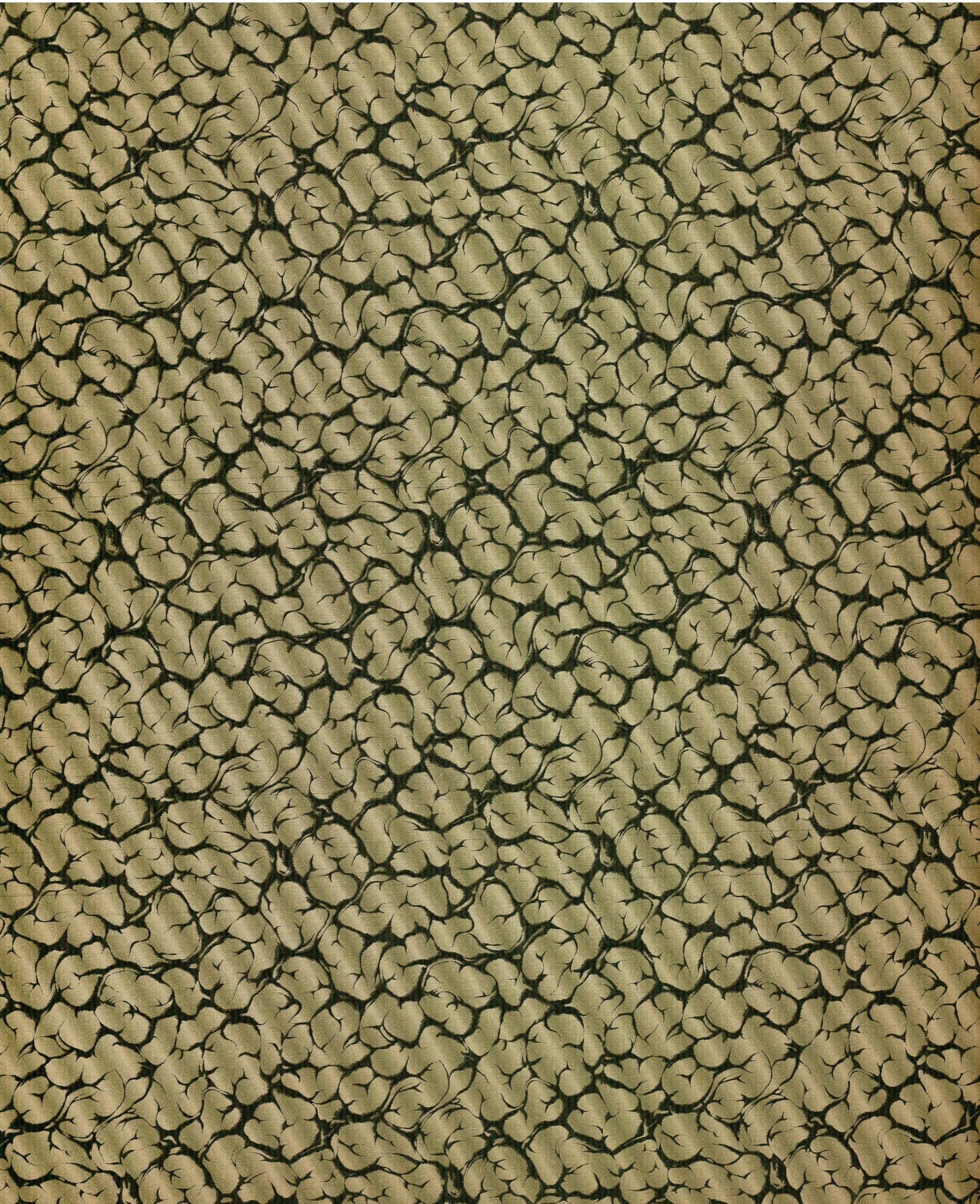
| | | | |
|--|-----------------|---|---------------|
| BOUCHER (Joseph) | 7/ janv. 1663 | I | 31 |
| BOUCHER (Joseph) | 3 décem. 1663 | I | 32 |
| BOUCHERON (François) | 13 janv. 1662 | I | 33 |
| BOULLON (Emmanuel-Théodore de La Tour d'Auvergne, duc d'Athre, gal de) | 16 août 1660 | I | 1 |
| BOUQUIN (Robert) | .. déc. 1664 | I | 34 |
| BOURELOIS (François) | 6 févr. 1665 | I | 35 |
| BOUREES DE REVELLON (Jacques) | 30 avr. 1663 | I | 36 |
| BOVIAC (François) | 8 octob. 1661 | I | 37 |
| BRAGELONNE (Pierre de) | 31 juill. 1661 | I | 38 ,et 38bis. |
| BRIDIER LIMBIERS (Roger-Antoine de) | 19 avr. 1655 | I | 39 |
| BRINDEAU (Pierre) | 15 févr. 1656 | I | 40 |
| BRINDEAU (Pierre) | 24 oct. 1661 | I | 41 ,et 41bis. |
| BRUNO (F. Didier) | 13 juill. 1670 | I | 42 |
| BURNEL (Guillaume) | 23 janv. 1662 | I | 43 |
| BURNEL (Etienne de) | .. mars 1662 | I | 44 ,et 44bis. |
| BUTILLIER (Edouard) | 2 août 1665 | I | 45 |
| CAMUS DE BALEMOLZ (Carolus) | 11 févr. 1654 | I | 10 |
| CAMUSAT (Pierre) | 7/5 mai/ 1649 | I | 46 |
| CAMUSAT (Louis-Jean) | 16 juill. 1662 | I | 47 |
| CAMUSSET (Pierre) | 13 août 1662 | I | 48 |
| CAMUSSET (Pierre) | 3 juill. 1669 | I | 49 |
| CANAVE (Charles) | 10 août 1656 | I | 50 |
| CARONVILLE (F. Charles de) | 3 juill. 1662 | I | 51 |
| CASSEL (François Ferrard) | 25 juin 1668 | I | 52 |
| CASTINAT (Clement) | 3 juill. 1663 | I | 53 |
| CAVELIER (Antoine) | 6 juill. 1659 | I | 54 |
| CAVOYE (Pierre de) | 28 juin 1663 | I | 55 |
| CERMOISE (Paul) | 26 janv. 1664 | I | 56 |
| CHEBELAIN (César) | 6 févr. 1662 | I | 57 |
| CHARBON (Jean) | 24 juill. 1670 | I | 58 |
| CHARPANTIER (Nicolas) | 26 juill. 1665 | I | 59 |
| CHARTON (Médéric) | 17 oct. 1662 | I | 60 |
| CHARTRAINE (Germann) | 12/ jan. 1662 | I | 61 |
| CHEMINEAU DE MARCAYS (François) | 10 juill. 1661 | I | 62 |
| CHEON (Pontius) | 30 août 1658 | I | 63 ,et 63bis. |
| CHESSNEL (Louis) | 27 oct. 1662 | I | 64 ,et 64bis. |
| CHOMET (Claude) | 7/30/ août 1654 | I | 65 ,et 65bis. |
| CLEMENT (Claude) | 27/ août 1664 | I | 66 |
| CLEMENT (Claude) | 30 déc. 1665 | I | 67 |
| CLETRON-RONNERRE DE CRUSY (Antoine-Benoît) | 6 août 1662 | I | 68 |



115644554

| | | | |
|--|----------------|---|--------------------|
| COLMAN (Daniel).....Droit | 20 mars 1666 | I | 69 ,et 69bis. |
| COMMINGE (Pierre).....Philosophie | 10 juill.1661 | I | 70 |
| COMPAIN (Adrien).....Théologie | 4 juill.1669 | I | 71 |
| COMSTABLE (Guillaume-Raymond de).....Philosophie | 13 juill.1669 | I | 72 |
| COTTEY (F. François).....Philosophie | 13 août 1662 | I | 73 ,et 73bis. |
| COUREAU DE PRESSIAT (René).....Théologie | 31 janv.1662 | I | 74 |
| COURET (F. François).....Théologie | 21 janv.1662 | I | 75 |
| COUSIN (Nicolas).....Théologie | 6 juill.1669 | I | 76 |
| COUSIN (Nicolas).....Droit canon | 4 décem.1669 | I | 77 |
| CHAMOISY (Jean).....Théologie | 16 juil.1656 | I | 78 |
| DAULIN (Charles-Larent).....Théologie | 6 août 1669 | I | 79 |
| DAIX (Thaddée).....Philosophie | 27 juil.1666 | I | 80 |
| DATON (Guillaume).....Philosophie | 24 août 1664 | I | 81 |
| DEHAUIS (Jacques).....Philosophie | 8 sept.1668 | I | 82 |
| DELAHAYE (Alexandre).....Théologie | 26 juil.1655 | I | 83 |
| DELECEY (Gabriel).....Théologie | 4 janv. 1653 | I | 84 |
| DEMOUREUX (Joseph-Scipion).Droit canon | 22 août 1669 | I | 85 |
| DEMOUREUX DE LA GRANGE (Jean).....Philosophie | 23 avr. 1665 | I | 86 |
| DESCAUBES (Louis).....Philosophie | 6 août 1662 | I | 87 |
| DES HAYS DU FOSSARD(Louis).Philosophie | 29 juil.1665 | I | 89 ,et 89bis. |
| DESJAINY DE SAINCT LUC (Louis).Philosophie | 25 juil.1662 | I | 88 ,et 88bis. |
| DEVOUEUX (Claude).....Théologie | 29 août 1666 | I | 90 |
| DIROYS (François).....Droit canon | 11/12 fév.1653 | I | 91 |
| DROUARD DES MARRETS (François).Théologie | 12 févr.1665 | I | 92 |
| DROUINET (F. Charles)et GAZON (Simon).....Théologie | 17 jan.1662 | I | 93 |
| DU FOUR (Pierre).....Théologie | 7 avr. 1657 | I | 94 |
| DUFOS (Pierre).....Philosophie | 26 nov. 1665 | I | 95 |
| DU MESNIL POTIER(Charles).Philosophie | 20 août 1662 | I | 97 |
| ESGOURVILLE (François d')..Théologie | 16 juil.1662 | I | 96 |
| ESMERY (Pierre).....Philosophie | 6 mars 1662 | I | 98 |
| FAUVEL (André).....Philosophie | 25 août 1659 | I | 99 |
| FERDIN (Nicolas).....Philosophie | 10 août 1662 | I | 100 |
| FERRARD (Philipppe).....Théologie | 17 juil.1667 | I | 101 |
| FOIX (Henri-Charles).....Philosophie | 7 sept. 1669 | I | 102 |
| FORCENBERG(S. Charles).....Théologie | 11 sept.1661 | I | 103, et 103bis |
| FOUCQUER (Yvon).....Philosophie | 15 mai 1656 | I | 104, et 104 bis |
| GALLIOT(Charles).....Théologie | 25 juil.1666 | I | 105 |
| GANNIER (Antoine).....Philosophie | 101 | I | 106 |
| GERARD (Isaac-Arselme).....Théologie | 20 juil.1648 | I | 107 |
| GIFFORD (Bonaventure).....Théologie | 30 janv.1664 | I | 108 |
| GIRARD (F. Sébastien).....Théologie | 26 janv.1672 | I | 109 |
| GOBERN (Michel).....Philosophie | 13 sept.1667 | I | 110 |
| | 21 juil.1667 | I | 111 |

| | | | |
|--|----------------|---|--------------------|
| GODET (Pierre).....Philosophie | 25 juil.1660 | I | 112 ,et 112bis. |
| GODET DES MARAIS(Paul de).Philosophie | 24 juil.1667 | I | 113 |
| GOUDOUIN (Raymond).....Physique | 16 août 1664 | I | 114 |
| GOURD (Jacques).....Philosophie | 9 juil.1666 | I | 115 |
| GOYER DE BECHEREL (François).Théologie | 4 décem.1667 | I | 116 |
| GOYER (Germann).....Théologie | 27/28 fév.1662 | I | 117 |
| GUENON (François).....Théologie | 2 mai 1663 | I | 118 |
| GUERIN (Etienne).....Théologie | 17 juil.1664 | I | 119 |
| GUICHARD (André).....Théologie | 14 nov. 1663 | I | 120 |
| GUILLOU (François).....Théologie | 10 janv.1665 | I | 121 |
| GUILLOU (Louis).....Philosophie | 10 août 1661 | I | 122 |
| GUTTONNEAU (Adrien).....Philosophie | 19 août 1669 | I | 123 ,et 123bis. |
| HACTE (Nicolas).....Philosophie | 19 août 1659 | I | 124 |
| HAMEAU (André).....Théologie | 15 nov. 1667 | I | 125 |
| HAMON (Jean).....Médecine |1645 | I | 126 |
| HAMON (Jean).....Médecine |1646 | I | 127 ,et 127bis. |
| HARLE (Jean-Baptiste).....Philosophie | 1er août1661 | I | 128 |
| HERBERMAN (Domt).....Philosophie | 7 juil. 1664 | I | 129 ,et 129bis. |
| HERNEQUIN (François-Louis).Philosophie | 9 juil.1663 | I | 130 ,et 130bis. |
| HOULLIER (Etienne).....Philosophie | 22 juil.1661 | I | 131 |
| ILLIERS D'ENTRACQUES(Joseph d').....Philosophie | 26 juil.1667 | I | 132 |
| JAPPIN (Jean-François).....Droit canon | 19 févr.1661 | I | 133 |
| JAPPIN (Jean-François).....Théologie | 16 nov. 1661 | I | 134 |
| JARRE (Pierre).....Théologie | 9 juil. 1662 | I | 135 |
| JOLAIN (Jean).....Théologie | 16 fév. 1662 | I | 136 |
| JOLY (Melchior).....Philosophie | 16 août 1660 | I | 137 |
| JOUVANCOUERT (Nicolas).....Philosophie | 9 juill.1662 | I | 138 ,et 138bis |
| JOUVIN (Jacques-François).....Philosophie | 28 janv.1665 | I | 139 |
| JUR (François).....Théologie | 28 juil.1644 | I | 140 |
| LABORIE (Jean).....Théologie | 23 oct. 1659 | I | 143, et 143bis |
| LAFREMAIS (Laurent de).....Théologie | ? | I | 143ter |
| LA HAYE (Laurent de).....Théologie | 24 nov. 1659 | I | 144 |
| LAINÉ (Jean).....Théologie | 1er juil.1669 | I | 145 |
| LAINRIELIERE (François de).Philosophie | 2 août 1664 | I | 146 ,et 146bis. |
| LAIN (Jean).....Théologie | 12 mai 1666 | I | 147 |
| LAIN (Jean).....Théologie | 5 mai 1668 | I | 148 ,et 148bis. |
| LAINCAN DE BOISEVRIER (Robert de).....Philosophie | 20 juil.1659 | I | 149 |
| L'ANGLE (Nicolas de).....Philosophie | 10 août 1663 | I | 141 |
| LANGLÉ (Robert de).....Philosophie | 2 juil.1662 | I | 151 |
| LANGLISE (François).....Philosophie | 13 févr.1666 | I | 150 |



ASSENTIRI dogmaticis aliquid fieri posse affirmari, primus est ad recte philosophandum gradus. Philosophia diuinitus Adamo est infusa: ipsius obiectum, quicquid fieri potest: factus, solus intellectus humanus: factus, beatitudo: partes, speculativa & practica.

SINE VLA mentis operationis sunt capaces vegetarum & fallentis. His sequi annuementa methodos ac arguerunt. Existit ad verum dirigat Logica docens habetis ab velle realiter distinctus, ac scientia practica reliquis simpliciter necessaria.

ENITA rationis solus intellectus creatus facit. Deus nequit absolute vti exemplaribus extremis Ideæ: quos impugnat Aristoteles reficendas; quos Plato docuit admittente. Vniuersale verè est secundum formam, ac quinquplex practice, non tamen verum genus.

VNIVS essentie constituitur gradus solâ ratione distinctum. Genus in vniuersa specie constituitur. Species est subalterna vel infima. Differentia est vniuersalis, quod prædicatur in quale quid: inferior non includit superiores: Reciproca cum specie infima non est incompleta.

PRORIVM athens ad quantum vniuersale subiecto conuenit necessitatis & reciprocè. Accidens commune rectè à Porphyrio dicitur posse adesse & abesse in eodem subiecto: nec malè pro præca dicitur ab eodem in separabile & inseparabile.

CATEGORIA exactè loquendo vniuersa: populariter ac practice duplex. Categoricalis substantia est omnis & sola creatura complexa. Quantitas omnis & sola continua. Qualitatis retinenda vulgarè tum definitio, tum quadruplex diuisio.

REALIS sunt relationes tam transcendentes, quam categorice. Hæc nihil præter extrema & fundamenta. Terminis itaque habent absolutos in suo genere, ac pro eorum multiplicatione multiplicamur inæquitate. Ad hoc simul cum passione in effectum recipitur.

VB, quando, finis, & habitus non sunt critia incompleta. Oppositio sunt quantum species. Voces humane signa sunt arbitraria. Diarum propositionum singulatum contradicentium de futuro contingentium vna est determinatè vera.

CONTRARIUM non est pars syllogismi. Minus certa est quam præmissa. Positio eorum assensu sequitur necessitatem quoad speciem & exercitium. Demonstratio legitima est propter quid vel quia. Illa postrema est ac nobilissima simpliciter.

SICUT scientiam existere nemo iure negauerit: ita nec putauerit esse remissam Platoni. Cognito tamem potest cum fide ac opinione. Totalis non est amplexus aut habitus, sed plurimum complexio.

Hæc Theos. Deo duce, inueni conabitur HENRICVS LVD. BARIN DE LA GALLISSONNIERE Bimicus die Dominica 26. Aug. An. D. M. DC. L.

Abierit eni GUILIELMVS DES AVBERIS Baccalarius Theologus, & Regius Philosophia Professor.

ETHICA non est prudentia, sed scientia practica honeste actiones humanas conformans. Ipsus præcepta facilius exequitur finis; audit tamen cum factis iudicium. Eundem partes sunt Ethica generalis & particularis; huius deinde Moralia, Oeconomica, & Politica.

MALVM nequit amari, nec aliud esse à priuatione. Inueniuntur et separabile ab honesto, non vtile. Omnia propter finem agunt: intellectum quidem prædicta formaliter, reliqua materialiter. Nemo potest simul operari propter duos fines vltimos totales simpliciter.

OBIECTIVA nostra beatitudo est solus Deus: formalis in eadem cognitione ac dilectione consistit, eoque inæqualis. Homo naturaliter inueniuntur Dei cognitionem nequit appetere. Voluntarium est quod fit à principio interno cum perfectè cognitione finis.

QUÆ ex metu sunt à creaturis tremibus ratione, ita sunt inanimata secundum quid, vt temperant voluntaria simpliciter. Talia quoque sunt, quæ sunt ex concupiscentiâ: hæc quippe augent, non tollunt immunitatem voluntarium. Inanimatarum ergo est à VI vel ab ignorantia.

VOLUNTAS conditionem pati potest quoad actus imperatos, non verò quoad electos. Libertas magis proprie dicta est potentia actus spiritualis ex se indifferens. Eundem compos homo, sedque voluntas, non autem intellectus.

ACTIOES humane octo. Bonitatem & malitiam habent ab obiecto, fine, ac circumstantiis. Alique indifferentes in specie, nulla in individuo. Passiones ex se nec bonæ nec malæ. Sex sunt appetitus concupiscentis, ac totidem iudicantis.

HABITVS resident in intellectu, voluntate,phantasi, appetitu sentiente, ac virtute motrice. Concurrunt effectivè ad actus: per se ipsam producantur: inveniuntur per solos magis intentos: detentur per contrarios; solâ cessatione non deperunt.

VIRTUS iam definitur habitus electivus, & cetera. Virtus non fit habitus essentialiter bonus. Si præterea in Deum & iustitiam excipias, omnes potest esse in intellectu humana virtuosâ. Nulla sine aliis esse potest in actu perfectio. Prædicatur subiectum est intellectus; ceterarum voluntas.

FORTITUDO magis elucet in repetitis quam præcævis, ac in sustinendo quam aggrediendo. Nihil est auctoritate prædicta duculo consilij, atque sibi auctoritate directè vitam adimere: potest tamen fortiter aliquando mors prædigi, potestque specie alterius vite ablatâ.

VIRTUA vniuersalis est virtus à reliquis distincta. Neganda non est, quæ ab Aristotele admitti, naturalis sententia; sed detrahenda, tam quæ eadem ab ortibus potestandi ac mutui fecus in eorum ratione, quam quæ Platoni placuisse creditur multorum & liberorum communi.

OMNIVM princeps scientiarum Metaphysica neque Deum solum, neque solum substantiam, neque quos omnes, sed ens à materia secundum rem & cognitionem abstractam spectat. Primum enim principium est impossibile idem simul esse & non esse.

IN quantum creaturâ est potentia obedientialis ab eius essentia indistincta. Principium individuationis nonus est essentia generis specie adiectæ. Essentia & existentia nunquam nisi ratione differunt. Vniuersales ergo essentia non magis ab eorum realitate quam angustas.

PRINCIPIVM habitus patet quam causa. Hæc quinquplex est. Prædicta ordinatione, diuina idem numero electus esse potest naturaliter à pluribus causis totalibus eundem generis & ordinis diuini, non autem conjugatum. Vt quoque modo diuinitus est possibilis.

CAUSÆ aliquæ sunt inter se connexæ, ac huiusmodi causæ. Secundæ primam determinant quoad speciem: ab ea verò determinatur quoad individuum: ita tamen vt ab ipso prænotio Physica. Res omnes absolute sunt reparabiles. Causis est necessitas ad agendum contradi.

SOIA substantia est causa principis actionis. Accidens tanquam causa instrumentaria substantie productiorem attingit. Non videtur absolute impossibilis creatura creatrix etiam in genere cause principis. Nulla prioris sine concursu Dei esse potest aut operari.

EXEMPLAR est conceptus obiectivus. Finis causæ secundum esse reale. Qualitatis Exemplaris est ad illud: Finis, motio metaphisica; Agens, actio; Mente, sustentatio; Formæ, informatio. Causa varia ratione, genus est fortium, specieque ipsi opposita.

ENIS habet vna principia rei & cognitionis. Vniuersè dicitur de suis inferioribus. Ipsius primarie ac recte propter naturam sunt veritas, veritas, & bonitas. Primaria formaliter est indistincta in se: Secunda conformitatis cum propriis principis: Tertia ipsa rei perfectio.

SVPORIVM est incommunicabile alteri per modum nature. Substantia creatura modus est substantie creatæ proprius. Potest eadem natura creatura remanere pluribus substantiis, eademque substantia creatura plures terminare nature.

DEI existentiam, vniuersam, simpliciter, infinitatem, æternitatem, immutabilitatem, immutabilitatem, omnipotentiam, pluraque alia attributa ratio naturalis demonstrare potest. Existere quoque Angelos eadem habet, sed non eundem.

NELI sunt in corpore, alique directæ, alij eiusdem in anima speciei. Si aliæque sine speciebus, creatura verò per species à Deo infusa possunt cognoscere. Libens autem cogitationes alienas nequeunt nosse habetâ directione.

PHYSICA est scientia contemplatiue compositionis. Prima generatio principia sunt, quæ se inueniunt, nec ex aliis fiunt: sed ex quibus rectè ab Aristotele prima constituta, nuncupantur, nempe materia, forma, & priuatio.

INANS est communis corporalis forma; & inæciata materia propria existentia & substantia potentia & appetit ad quatuor formas naturæ aliquas esse substantiales plures certum præter quatuor rationales creaturas.

RS naturam imitari ac perficere potest, inquit. Totum physicum non differt à partibus et forma iunctæ inter se corporis essentiam. Natura est principium motus & quietis quo est primo per se & non per accidens.

CONTINVI partes diuiditæ sunt infinitum celo adu distinctæ. Quantitas motus nihil sapienter: quantum autem aliquid superadderet, tamen ei esset coævus; nec minus sine adfectione propria rarefacto, & sine detractione condensatione.

VNUS idem locus duo simul corpora naturaliter capere, neque idem corpus duobus locis occupare. Vnde possibile diuinitus. Solus auctor nature potest inducere vacuum. Aliquis in vacuo esse possit motum & projectionem: in illis gaudium & letitiam.

TEMPVS est rectum extensum. Motus Aristotelici minor autem quantum, qualitates, & vbi requirit motum in instanti fieri. Projecta moue proiectivæ: grana & leuia a seipsis. Mobile potest esse in puncto reflectionis.

FINITA sunt opera nature, finitumque tempus & mundus conductus est: possibilem tamen inhiat, ac mundi ab æterno creationem probabilis assensu quam negauerit. Cælum est corpus quantum præter: non vitus, neque circumacter mouetur ab instanti.

ELEMENTA non debent alia fieri à quatuor vniuersis scilicet igne, ære, aquâ, & terra. In perfectio remanet actu secundum qualitates, non a perfectum formas substantiales. Omnia sunt transibilia in se inueniunt. Ignis aliquis est in concavo Lunæ.

SINEVIS Elementis præter duplicem qualitatem inueniuntur peculiaris conuenit vis motrix quæ summa est in duobus tantum extremis. Datur agens & patiens actio reciproca. Simile non agit in inferiori sit partium similitudine additione.

LETARIO continet ac succellat per se. Nulla sit resoluitio ad materiam primam. An in actus primus compositi originis potestare vitam habere. Vna est vna in vitæ. Sola naturalis est indistincta nec alia præter eam certum humanam informant.

PRO LAUREA ARTIVM.
IN AVLA HARCVRIANA